

UP Board Class 6 Geography Notes Chapter 3 ग्लोब: अक्षांश एवं देशांतर

ग्लोब: अक्षांश एवं देशांतर

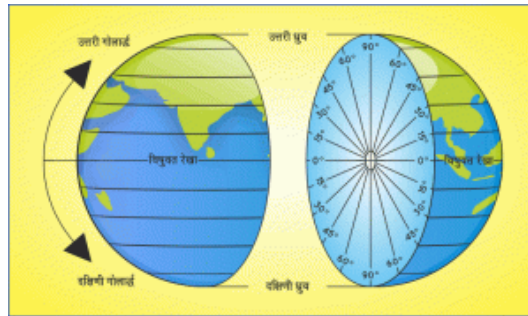
अक्षांश रेखाएँ- विषुवत वृत्त(भूमध्य रेखा) से ध्रुवों तक स्थित सभी समानांतर काल्पनिक वृत्तों को अक्षांश(समानांतर) रेखाएँ कहते हैं। देशांतर रेखाएँ- उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव को जोड़ने वाली काल्पनिक रेखा को देशांतर रेखाएँ कहते हैं।

अक्षांश

भूगोल में किसी स्थान की स्थिति को बताने के लिए उस स्थान का अक्षांश (latitude) तथा देशांतर (longitude) बताया जाता है। किसी स्थान का अक्षांश, धरातल पर उस स्थान की 'उत्तर-दक्षिण स्थिति' को बताता है। उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों का अक्षांश क्रमशः ९० डिग्री उत्तर तथा ९० डिग्री दक्षिण होता है।

महत्वपूर्ण अक्षांश रेखाएं

कर्क रेखा यह उत्तरी गोलार्ध में भूमध्य रेखा से $23\frac{1}{2}^{\circ}$ ($23^{\circ} 30' N$) की कोणीय दूरी पर स्थित है, मकर रेखा: यह दक्षिणी गोलार्ध में भूमध्य रेखा से $23\frac{1}{2}^{\circ}$ ($23^{\circ} 30' S$) की कोणीय दूरी पर स्थित है, आर्कटिक वृत्त: यह भूमध्य रेखा से उत्तर में $66\frac{1}{2}^{\circ}$ ($66^{\circ} 30' N$) की कोणीय दूरी पर स्थित है, अंटार्कटिक वृत्त: यह भूमध्य रेखा से दक्षिण में $66\frac{1}{2}^{\circ}$ ($66^{\circ} 30' S$) की दूरी पर स्थित है, हर वर्ष दो अयनांत होते हैं, जिन्हें ग्रीष्मकालीन अयनांत और शीतकालीन अयनांत कहा जाता है, ग्रीष्मकालीन अयनांत: 21 जून के दिन जब सूर्य कर्क रेखा पर ($23^{\circ} 30' N$) ऊर्ध्वाधर होता है, शीतकालीन अयनांत: 22 दिसंबर के दिन जब सूर्य मकर रेखा पर ($23^{\circ} 30' S$) पर ऊर्ध्वाधर होता है।



देशांतर

देशांतर रेखाएं मुख्यतः किसी स्थान का समय दर्शाने के लिए मानी गई हैं, इन रेखाओं की सहायता से हम सरलता से समझ सकते हैं, कि किसी पृथ्वी के स्थान पर समय क्या है? इन विभिन्न देशांतर रेखाओं में से एक देशांतर रेखा को मुख्य प्रधान देशांतर रेखा माना जाता है, इसे शून्य अंश देशांतर रेखा भी कहते हैं।

संपूर्ण पृथ्वी की देशांतर रेखाओं को 360 भागों में बांटा गया है, पृथ्वी 24 घंटे में 360 अंश घूमती है इस कारण पृथ्वी 1 घंटे में अपने अक्ष पर 15 अंश घूमेगी, पृथ्वी को एक अंश घूमने के लिए लगभग 4 मिनट का समय लगता है, दो देशांतर रेखाओं के बीच की दूरी या एक अंश देशांतर विषुवत रेखा में 111.32 किलोमीटर होती है, दो देशांतर रेखाओं के बीच की दूरी गोरे कहलाती है।

देशांतर रेखाएं और समय

एक ही देशांतर रेखा में स्थित स्थानों का स्थानीय समय (सूर्य) समान होता है। चूंकि पृथ्वी 24 घंटे में 360 डिग्री का एक चक्कर पूरा करती है, यह एक घंटे में 15 डिग्री या 4 मिनट में 1 डिग्री घूमती है, पृथ्वी पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है, इसलिए ग्रीनविच के पूर्व में स्थित स्थानों पर सूर्य पहले दिखता है और समय आगे होता है, जबकि ग्रीनविच के पश्चिम में स्थित स्थानों पर सूर्य बाद में दिखता है और समय पीछे होता है, भारत, जिसका देशान्तायीय विस्तार लगभग 30 डिग्री है, ने मानक समय के लिए 82 ½° पूर्व देशांतर को चुनकर केवल एक समय क्षेत्र को अपनाया है, जो जीएमटी (ग्रीनविच मीन टाइम) से 5 घंटे और 30 मिनट आगे है।

मानक समय

(i) वह समय है, जो किसी देश या विस्तृत भू-भाग के लोगों के व्यवहार के लिये स्वीकृत होता है। यह उस देश के स्वीकृत मानक याम्योत्तर के लिये स्थानीय माध्य समय होता है ! हमारे अपने स्थानों के समय 'स्थानीय समय' कहलाते हैं। इनसे हमारी समय संबंधी स्थानीय आवश्यकता तो पूर्ण हो जाती है, किंतु ये अन्य स्थानों के लिये उपयोगी नहीं होते। इसीलिये 'मानक समय' की आवश्यकता पड़ती है।

(ii) भारतीय मानक समय (IST) की स्थापना 1 सितम्बर 1947 को हुई थी।

(iii) समय के इस पैमाने को नापने का अर्थ भारतीय समय की अंतरराष्ट्रीय मानक समय ग्रीनविच मीन टाइम (GMT) से तुलना करने से है GMT का निर्धारण इंग्लैंड के ग्रीनविच में स्थित ऑब्जर्वेटरी से होता है।

(iv) भारत में 82.5° पूर्वी देशान्तर, जो कि इलाहाबाद के निकट नैनी से गुजरती है, के समय को मानक समय माना गया है।

(v) भारत का मानक GMT से 82.5° पूर्व है , जिसका अर्थ है कि हमारा मानक समय ग्रीनविच के मानक समय से साढ़े पाँच घंटे आगे है। अर्थात इंग्लैंड में जब दोपहर का 12 बजे का समय होता है, तब भारत में शाम के 5:30 बजे होते हैं ! सभी देशों का समय इसी आधार पर ही तय किया जाता है। एक देश ऐसा भी है जो इसका अपवाद है ! उत्तर कोरिया ने दुनिया के समय मापने के इस तरीके को सिरे से नकार दिया है।



अंतरराष्ट्रीय तिथि रेखा

अंतरराष्ट्रीय तिथि रेखा प्रशान्त महासागर के बीच में 180° देशान्तर पर उत्तर से दक्षिण की ओर खींची गई एक काल्पनिक रेखा है और इसी के कारण तिथि में परिवर्तन होता है।

0° देशान्तर अथवा ग्रीनविच माध्य समय से 180° देशान्तर तक जाने में 12 समय पेटियों को पार करना पड़ता है और पूर्व की ओर घड़ी को 12 घंटों आगे तथा पश्चिम की ओर 12 घंटे पीछे करना पड़ता है।

इस कारण से 180° पूर्व पश्चिमी देशान्तर पर दो अलग-अलग दिवस मिलने से होने वाली परेशानी को समाप्त करने के लिए वांशिंगटन में हुई 1884 की सभा में 180° देशान्तर को अंतरराष्ट्रीय तिथि रेखा निर्धारित किया गया है।

घड़ियों का समय ठीक रखने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय तिथि रेखा के पूर्व से पश्चिम की ओर जाने पर एक दिन घटाते हैं तथा पश्चिम से पूर्व की ओर जाने पर एक दिन बढ़ाते हैं।

